आओ दंगा-दंगा खेलें

भीषण संकट के भंवर में है, यह मानव-द्रोही व्यवस्था

-मनोज कुमार झा

साम्प्रदायिक दंगा एक ऐसा औजार है, जिसका इस्तेमाल भारतीय राजनीति में ब्रिटिश काल से ही हो रहा है। अगले साल लोकसभा चुनाव है और इस साल पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं। इसे देखते हुए यहां-वहां दंगों का भड़कना कोई आश्चर्य की बात नहीं। दंगों से वोटों का ध्रुवीकरण होता है। मतदान की फ़सल लहलहाती है और दंगों का आयोजन करवाने वाले राजनीतिक दलों को फ़ायदा होता है। यह बहुत ही सफ़ल आजमाया हुआ नुस्खा है, जिसका इस्तेमाल प्राय: सभी राजनीतिक दलों ने जमकर किया है और आगे भी करेंगे।

सत्ताधारी दल अगर दंगों का आयोजन करता है तो पुलिस-प्रशासन के अमले इसमें भरपूर सहयोग करते हैं, जैसा कि गुजरात में गोधरा कांड के बाद नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रायोजित दंगे में देखने को मिला। 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद कांग्रेस ने दिल्ली और देश में सिखों का जो कत्ले आम करवाया, उसमें भी पुलिस-प्रशासन ने आतताइयों का सहयोग किया था। सिखों के ख़िलाफ़ दंगा भड़काने वाले, दंगाइयों का नेतृत्व करने वाले कांग्रेस के 'सम्मानित' और उच्च पदस्थ नेता हैं। इस देश की अदालतें आज तक उन्हें सजा नहीं दिलवा पाईं और अब तो शायद ही उन्हें सज़ा मिले।

गोधराकांड के बाद मुसलमानों का कत्लेआम कराने वाले नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री पद के घोषित उम्मीदवार हैं और मीडिया उन्हें सबसे लोकप्रिय नेता बता रहा है। खाये-पीये-अघाये मध्यवर्गीय युवा और बेरोजगारी से हताश निम्न मध्यवर्गीय व गरीब युवा भी इनकी जय-जयकार कर रहा है। यह अविवेक और विचारहीनता का दौर है। स्वार्थ में डूबे बुद्धिजीवी, उच्चपदस्थ लोग और करोड़ों-अरबों में खेलने वाले कपटी गेरूआवस्त्रधारी बाबा, योगगुरू आदि अविवेक और विचारहीनता को बढ़ावा देने में दिन-रात लगे हुए हैं ताकि उनकी सत्ता और वैभव का साम्राज्य लगातार बढ़ता ही जाए।

गरीबों की आहों और आंसुओं से उन्हें कोई लेना-देना नहीं। कमसिन लड़कियों की लुटती आबरू से वे जरा भी विचलित नहीं होते-अपने स्वर्ग-सरीखे महलों में वे पूरी तरह सुरक्षित हैं, अय्याशियों में डूबे। देश में होने वाला हर एक दंगा इनकी ताकत को बढ़ाता है। दंगा इनके लिए एक खेल है, ऐसा खेल जिसके सहारे ये सत्ता के उच्चतम सोपानों तक पहुंचने की हसरत रखते हैं और पहुंचते भी हैं। दंगा इनके लिए अमोध अस्त्र है। हर पार्टी में दंगाई भरे पड़े हैं। आने वाले दिनों में दंगे और भड़केंगें।

नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बनने के लिए हर हद से गुजरने को तैयार हैं। और दंगों से फ़ायदा उठाने के लिए, कांग्रेस, सपा, बसपा, सभी तैयार हैं। तो गरीब हिंदू-मुसलमान भी दंगों में अपना सब कुछ लुटाने और मरने-खपने के लिए तैयार रहें। इंदौर दंगा, मुजफ़्फ़रनगर दंगा तो ट्रेलर की तरह ही हैं।

हमारे देश में उपनिवेशवाद ने एक ऐसा संस्कृतिक माहौल विकसित किया और आजादी मिलने के बाद उसके पिट्ठू शासकों ने औपनिवेशिक संसकृति और विचार को इस कदर मजबूत किया कि आम हिंदू मानस में मुसलमानों के प्रति एक अजीब वितृष्णा और यहां तक कि घृणा का भाव दिखाई पड़ता है। इस भाव को मजबूत बनाने में संघियों-भाजपाइयों, हिंदू धर्म के संतों-महंतों, रामदेव जैसे अरबपति योगगुरूओं और आसाराम जैसे बलात्कारी राक्षसों की विशेष भूमिका रही है। इस आमफहम घृणा-भाव के कारण दंगों के लिए ज़मीन काफ़ी उर्वर होती है।

बहुसंख्यक सांप्रदायिकता की प्रतिक्रिया में अल्पसंख्यकवाद का उभार लाजिमी है, जिसे इस देश में राजनेता सेकुलरिज़्म के नाम पर भुनाते हैं और मुसलमानों का मसीहा होने का दावा करते हैं। मुलायम, नितीश, लालू आदि ऐसे ही मसीहाओं में हैं। ये अल्पसंयक सांप्रदायिकता को हवा दे वोटों की फ़सल काटते हैं। वामपंथियों को भी इसी श्रेणी में रखा जाना चाहिए और 'वंशवादी' कांग्रेस तो मौका ताड़ अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक, दोनों तरह की सांप्रदायिकता की सवारी गांठती है।

औपनिवेशिक शासकों ने अपने लूट के साम्राज्य को विस्तार और स्थायित्व प्रदान करने के लिए सांप्रदायिकता के अस्त्र को आजमाया था। यह इतना सफल रहा कि इस आधार पर वे देश का विभाजन तक करवा सके। इसके पीछे उनका मकसद परोक्ष तौर पर अपने राजनीतिक-आर्थिक प्रभुत्व को बनाये रखना था। विभाजन के बाद जिस पड़े पैमाने पर दंगे और नरसंहार हुए, वे विश्व इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदियों में एक हैं।

उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के पिट्ठू शासकों ने अपनी लुटेरी शासन व्यवस्था को कायम रखने के लिए सांप्रदायिकता को लगातार बढ़ावा दिया है। सांप्रदायिकता ने अब लाइलाज कैंसर का रूप ले लिया है। वर्तमान व्यवस्था में इसे दूर करने की बात सोचना बेवकूफी होगी।

व्यवस्था में कोई सुधार संभव नहीं। शासकों ने लूट, भ्रष्टाचार, शोषण, दमन को चरम पर पहुंचा दिया है। निर्लज्जता उनका आभूषण है। हद तो ये है कि चूसने के लिए शासकों के सामने गरीब जनता की हड्डियां ही बच गई हैं। चूसने को रक्त न मिले तो कैसे चलेगी सरकार? साम्राज्यवादी रेटिंग एजेंसियों न भारत की आर्थिक रेटिंग इतनी गिरा दी है कि कोई साख नहीं रह गई। बिना साख कर्ज भी कैसे मिले?

तो फ़िर लूटपाट, छीनाझपटी, दंगा, गृहयुद्ध। बच पाना मुश्किल है। भीषण संकट के भंवर में है यह मानव-द्रोही व्यवस्था। जनता को बहला कर वोट लेने के लिए कोई झुनझुना नहीं रह गया है लीडरों के पास। ऐसे में, सत्ता के शिखर तक पहुंचने के लिए 'आओ दंगा-दंगा खेलें' उन्हें आसान रास्ता नज़र आता है।

तुर्की-ब-तुर्की

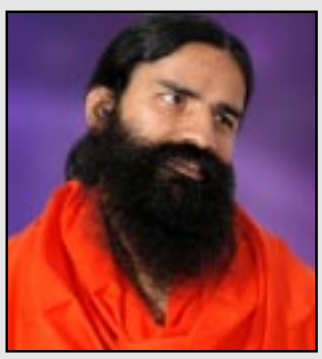

रामदेव

लदन के हीथ्रो हवाईअड्डे पर 8 घंटे तक पूछताछ के बाद रामदेव ने कहा, "यह 124 करोड़ भारतीयों का अपमान है।"

हमारा कहना है-

- उन्होंने (ब्रिटिश कस्टम एवं आव्रजन) अपने कानून के अनुसार कार्य किया था। इसमें तो आपका, रामदेव जी व्यक्तिगत अपमान भी शामिल नहीं है। हां, आपको हिन्दुस्तान की आदत पड़ी हुई है जहां आप हर सामान्य कानून से ऊपर हैं। आप जैसे लोगों को जब कानून की पालना करनी पड़ती है तो अपना अपमान नज़र आता है।
- आप जैसे ही एक अन्य महानुभाव उत्तर प्रदेश के मन्त्री आजमखां को भी जब अमेरिकी आव्रजन अधिकारियों ने रोका था तो उन्होंने भी इसे सारे देश का अपमान बताया था। आज़मखां कानून अपनी जूती पर रखने की आदत का शिकार थे और आप कानून से अपने पैर छुआने की आदत का। पर यह सब हिन्दुस्तान में चलता है, ब्रिटेन और अमेरिका में नहीं। आपके आह्वान के बावजूद 124 करोड़ भारतीयों में से शायद ही कोई आवाज़ वैसी उठी हो जो आप चाहते थे। यहां तक कि आपके आशीर्वाद से प्रधानमंत्री पद का सपना देख रहे और जगह-जगह सिंह-गर्जना कर रहे नरेन्द्र मोदी ने तो चूं तक नहीं की। करता भी कैसे? मोदी को क्या ब्रिटेन और अमेरिका का वीज़ा नहीं चाहिये?
- योग आप बेचते हैं, आयुर्वेद आप बेचते हैं; मुनाफ़ाखोर व्यापारी के लिये इस तरह की पूछताछ आम बात होती है। आखिरकार स्टीरॉयड मिलाकर भक्तों को असाध्य रोगों से छुटकारा दिलाने की कपटी चालबाज़िया हिन्दुस्तान में बेशक चल रही हैं पर विकसित देशों के सख्त कानून इसकी इजाजत कैसे दे सकते हैं?
- क्या आप भूल गये कि पिछली बार आपको अमेरिका जाते समय आपके भक्तों ने समझाया था कि वहां अवैज्ञानिक दावे जेल की हवा भी खिला सकते हैं। रजनीश के साथ ऐसा हो भी चुका है। आपने भी इस सलाह पर अमल करते हुए उस वाहियात बकवास से स्वयं को दूर रखा था जो आप भारत में करते रहते हैं। उम्मीद है कि हीथ्रो का सबक आपको याद रहेगा।
- हम भारतवासी उस दिन की प्रतिक्षा में हैं जब भारतीय कानून का भी वैसा ही डर आप जैसों पर आयद होगा जैसा इन विदेशी कानूनों का होता है। यह भारतीय कानूनों की कमज़ोरी ही है कि दाभोलकर जैसे तर्कवादी विचारक की तो हत्या कर दी जाती है और आप जैसे मिथ्यावादी ढकोसलेबाज़ आदरणीय बने घूमते हैं।

सुधी पाठकों से हमारा अनुरोध

'मजदूर मोर्चा' को पढ़ने वाले सुधी पाठक भली-भांति समझते हैं कि यह एक पूर्णतया ग़ैरव्यवसायिक प्रयास है। आज की इस महंगाई के ज़माने में इसे नियमित निकालने की कठिनाइयों का अनुमान लगाना भी सुधी पाठकों के लिये कठिन नहीं होगा। इन कठिन परिस्थितियों में 'मजदूर मोर्चा' को नियमित बनाये रखने के अलावा इसकी गुणवत्ता को और बढ़ाने के लिये अनुरोध है कि डाक से प्राप्त करने वाले पाठक वार्षिक 100/-रुपया अथवा आजीवन 1000/- रुपया की सहयोग राशि 'मजदूर मोर्चा' को भेजने की व्यवस्था करें। सहयोग राशि 'मजदूर मोर्चा' कार्यालय 1डी/2 बी पी (हार्डवेयर चौक) एनआईटी फ़रीदाबाद के पते पर बजरिया मनीआर्डर अथवा चेक भेजी जा सकती है। इसके अलावा यूनियन बैंक ऑफ़ इन्डिया की किसी भी शहर की किसी भी ब्रांच में मजदूर मोर्चा के खाता संख्या 451102010004150 में सीधे भी रकम डाली जा सकती है।

जिला फ़रीदाबाद व पलवल के पाठक अपने हॉकर से प्राप्त कर सकते हैं। पाठकों से यह भी अनुरोध है कि 'मजदूर मोर्चा' पढ़ने के बाद अपनी टिप्पणियां, आपत्तियां, सुझाव इत्यादि साधारण डाक, ई मेल अथवा 9999595632 पर एसएमएस के द्वारा अवश्य भेजें। यह लेखन एवं सामग्री चयन में काफ़ी उपयोगी सिद्ध होगा।

-संपादक मंडल